इससे ग्रीष्म ऋतु में भी हरा चारा प्राप्त होता है।

भूमि की तैयारी :- इसकी फसल के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती हैं लेकिन बलुई-दोमट से चिकनी मिट्टी में भी इसकी अच्छी फसल हो जाती है। पानी के निकास का प्रबन्ध होना चाहिए। खेत की तैयारी 3-4 जुताईयाँ कर के की जात है जिसमें हर बार पाटा लगाना जरूरी है।

उन्नत किस्में :- सिरसा-9 (बहुवर्षीय) एवं एल.एल.सी.-3 (एक वर्षीय) मुख्य किस्में हैं। सिरसा टाइप-8 एक वर्षीय व एन.डी.आर. आई. सेलेक्शन-1 (बहुवर्षीय) आनन्द 3 (एकवर्षिय), ए.एल. 3 (बहुवर्षीय) प्रजातियां भी उत्तर भारत के लिए उपयुक्त हैं।

बीज की मात्रा:- छिकटवां विधि में बीज दर 12-15 कि.ग्राम व मेढ़ों पर बुवाई के लिए 10-12 कि.ग्राम प्रति हेक्टेयर रखी जाती है। बीज को कल्चर से उपचारित करना चाहिए अन्यथा रिजका के पूर्व खेत की 4-5 कुन्टल मिट्टी प्रति हेक्टेयर नये खेत में मिला देनी चाहिए।

कटाई एवं उपज :- बुवाई के 60-70 दिन बाद पहली कटाई की जाती है। फिर 25-30 दिन के अंतराल पर कटाई करते हैं। सामान्यत: 8-9 कटाइयाँ प्रति वर्ष मिल जाती है। उन्नतशील किस्मों से प्रतिवर्ष 80-100 टन हरा चारा प्रति हेक्टेयर मिल जाता है। 2 कटाइयाँ कम लेकर 2-4 कुन्टल बीज प्रति हेक्टेयर भी प्राप्त किया जा सकता है।

जई :-

रबी मौसम में बरसीम के बाद जई चारे की प्रमुख फसल है जिसका हरे एवं सूखे चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। जई का दाना पशुओं एवं मुर्गियों को प्रमुखता से खिलाया जाता है।

उन्नत किस्में :- केन्ट, ओ.एस-6, ओ.एस-7, यू.पी.ओ-94, यू.पी.ओ-212. आदि प्रमुख किस्में है जिनसे एक से अधिक कटाई ली जा सकती है।

बीजदर - 80-100 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। इसे बोने से पहले थीरम या केप्टान नामक फफूंदनाशी से उपचारित कर लेना चाहिए।

बुवाई का समय एवं विधि :- अक्टूबर से दिसम्बर तक जई की बुवाई कर सकते हैं। अगेती बुवाई करने से अधिक कटाइयाँ मिल जाती हैं। इसे छिटकवां विधि द्वारा, पत्तियों में या सीड ड्रिल से बो सकते हैं।

सिंचाई :- पहली सिंचाई बुवाई के 25 दिन बाद व बाद में 15-20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। कटाई रू सामान्यतया जई की कटाई 50 प्रतिशत फूल की अवस्था पर करने से उपज अच्छी मिलती है। यह बुवाई के 50-60 दिन पर आ जाती है। दूसरी कटाई पहली कटाई से 30-35 दिन बाद की जाती है तथा तिसरी कटाई बीज पकने पर करते है इससे चारे के साथ-साथ दाना भी मिलता हैं।

उपज:- 50-60 टन चारा प्रति हैक्टर हो जाता हैं।

नेपियर घास:- वर्षभर हरे चारे की आपूर्ति के लिए नेपियर घास किसान भाई अपने खेत में फरवरी से सितम्बर माह के अन्त तक कटिंग का रोपण कर सकते हैं। इसकी मुख्य किस्मे सी.ओ.3 सी.ओ.4 सी.ओ.5, पुसा जेन्ट नेपियर आदि हैं। इसकी पहली कटिंग 60 सेमी दूरी पर लगाई जाती हैं। पेनियर की घास की पहली कटाई 60-70 दिन पश्चात तथा इसके बाद फसल की बढवार के अनुसार 40-50 दिन के अन्तराल पर भूमि की सतह से मिलाकर करनी चाहिए वर्षभर में इसकी 6-7 कटाई से 2000-2500 क्विंटल प्रति हैक्टर तक हरे चारे की उपज प्राप्त होती हैं।

-: संकलन एवं प्रकाशन :-

डॉ. सेवाराम कुमावत, डॉ. गजानन्द नागल, डॉ. मनमोहन पूनियाँ, भागचन्द ओला

कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी (जोधपुर-II)

हरा चारा

उत्पादन

कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी (जोधपुर-II)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

देश में कृषकों की अभिरूचि चारे की अपेक्षा अन्न वाली फसलों के उत्पादन में ज्यादा है। चारे का उत्पादन कुल जोत का 4-6 प्रतिशत भूमि में ही किया जाता है। हरे चारे से पशुओं को केरोटिन की पूर्ति होती है। दुधारू पशुओं के दूध में विटामिन ए हरे चारे से ही मिलता है। दलहनी चारे पशुओं को आवश्यक प्रोटीन की मात्रा की पूर्ति करते हैं जबकि अदलहनी चारे कार्बोहाइड्रेट की पूर्ति करते हैं। इसके अलावा हरे चारे से पशुओं को पर्याप्त मात्रा में विटामिन एवं खनिज पदार्थों की पूर्ति होती है। हरा चारा खरीफ एवं रबी मौसम में विभिन्न फसलों द्वारा प्राप्त होता है। इसके अलावा नेपियर,दीनानाथ, अन्जन, धामन, आदि बहुवर्षीय घासें भी उगाई जाती है।

खरीफ की मुख्य चारा फसलें –

ज्वार :-

उन्नत प्रजातियां :- कटाई की संख्या के आधार पर प्रजातियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक कटाई वाली किस्में :- पूसा चरी-6, पूसा चरी-09, हरियाणा चरी-117, हरियाणा चरी-260, एम पी चरी, राज चरी-1, राज चरी-2, आदि। बहु कटाई वाली किस्में :-एस.एस.जी. 988. एस.एस.जी. 898, एस.एस.जी. 855, पी.सी.23, पी.सी. 29, आदि।

बीजदर :- अगेती एवं एक कटाई वाली प्रजातियों के लिए 35-40 कि0ग्रा0 बीज/हैक्टेयर तथा बहु कटाइयों वाली किस्मों के लिए 20-25 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टयर बीज दर रखते हैं।

कटाई :- चारे वाली ज्चार में तने पतले तथा पत्तियां अधिक होनी चाहिए। इसे बुवाई के 50-70 दिन बाद, 50 प्रतिशत पुष्पावस्था पर काटना आरंभ करते हैं । बहु-कटाई वाली किस्मों की पहली कटाई 60 दिन तथा बाद की कटाई 40-50 दिन के अंतर पर करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में बढ़वार जल्दी होने से कटाई का अंतराल कम हो सकता है। इन किस्मों को जमीन से 6से.मी.या चार अंगुल ऊपर से काटने से कल्ले अच्छे निकलते हैं।

औसत ऊपजः- एक कटाई वाली किस्मों में 35-50 टन प्रति हैक्टेयर यानि 120-200 कुन्टल प्रति एकड़ हरा चारा प्राप्त हो जाता है, जबकि बहु कटाई वाली किस्मों से 480-520 कुन्टल प्रति एकड़ हरा चारा मिल जाता है।

बाजरा :-

वर्षा एवं पानी की कमी वाले क्षेत्रों में बाजरा फसल के अलावा चारे के लिए भी गाया जाता है। मक्का के मुकाबले इसमें सूखा सहन करने की क्षमता अधिक होती है। बाली आने से पहले ही इसे हरी अवस्था में काटकर पशुओं को खिलाया जाता है।

उन्नत किस्में :- जाइन्ट बाजरा, यू.यू.जे-प्ट एम, एम.टी.एन., एफ.एम.एच-3 एफ, ए.वी.के.बी.19पी.सी.बी. 164, एफ.बी.सी. 16, आदि।

खेती की तैयारी : खेत में कम नमी होने पर पलेवा कर 2-3 जुताई करनी चाहिए तथा पाटा अवश्य लगाएं ताकि नमी बनी रहे ।

बीज की मात्राः- 10-12 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर बोया जाता है।

कटाई एवं उपजः- बुवाई के 50-55 दिन बाद कटाई की जानी चाहिये। एक अच्छी फसल से औसतन 35-45 टन हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाता है।

लोबियाः- इसकी खेती दाने, हरे चारे, हरी सब्जी और हरी खाद के लिए की जाती है। चारे के लिए इसे ज्वार, बाजरा व मक्का के साथ मिलाकर भी बोया जाता है।

उन्नत किस्में :- रसियन जायन्ट, ई.सी.-4216, यू.पी.सी.-5287, सिरसा-10, के-585, सी.एस-88, एच.एफ. सी-42-1, यू.पी.सी.625, सी.एल.367, ।

बीज की मात्रा एवं बोने की विधि : हरे चारे के लिए 30-40 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की जरूरत होती है। ज्वार, बाजरा मक्का के साथ बोने के लिए बीज की मात्रा आधी कर देते हैं। छिटकवां विधि में बीज की मात्रा बढ़ा देते हैं। बीज को 60-90 से.मी. की दूरी पर पक्तियों में भी बोया जा सकता है।

बोने का समय :- इसकी बुवाई मार्च से सितम्बर तक करते हैं।

कटाई एवं उपज :- 60-70 दिन में इसकी फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। फली आने से पहले काटने से पौष्टिक चारा मिलता है जो नरम एवं स्वादिष्ट भी होता है। अच्छी फसल से 30-40 टन हरा चारा प्रति हेक्टेयर आसानी से मिल जाता है।

ग्वार :- यह खरीफ के मौसम में उगाई जाने वाली एक दलहनी फसल है जो सूखे क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। इसे ज्यादातर ज्वार या बाजरा के साथ मिलाकर उगाया जाता है। यह हर प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है परन्तु खेत में पानी भरा रह जाने से फसल नष्ट हो जाती है। बुवाई के 80-90 दिन बाद फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

बुवाई का समय एवं विधि :- ग्वार को अकेले या ज्वार, बाजरा के साथ मार्च के अन्तिम सप्ताह से लेकर जुलाई महीने तक बोया जा सकता है। खेत को अच्छी तरह जुताई करके तैयार किया जाता है। 35-40 किलोग्राम बीज अकेले की स्थिति में तथा 16 कि.ग्राम प्रति हेक्टेयर ज्वार, बाजरा के साथ मिलाकर बोया जाता है। इसे या तो छिटककर या हल के पीछे बोया जा सकता है।

उपज - प्रति हेक्टेयर 250-400 कुन्टल तक हरे चारे की उपज मिल जाती है। इसे फूल आने से पहले ही काट लेना चाहिए। क्योंकि बाद में सख्त होने के कारण पशु इसे कम पसन्द करते हैं। इसके चारे में 13-15 प्रतिशत तक प्रोटीन पाई जाती है। अतः इसे उत्पादन चारे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

रबी की मुख्य चारा फसलें

बरसीम :- रबी मौसम में बरसीम एक मुख्य दलहनी फसल है। इसमें प्रोटीन भरपूर मात्रा में मिलती है। इससे न केवल पौष्टिक हरा चारा मिलता है बल्कि जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है।

किस्में :- वरदान, मसकावी, बी.एल-1, जे.वी-1,2,पुसा जायन्ट, बी.एल.180 आदि।

बीज का मात्रा :- अच्छी पैदावार के लिए बीज को राइजोबियम नामक बैक्टीरिया के कल्चर से उपचारित किया जाता है। इसके लिए कल्चर को 1 लीटर पानी व 100 ग्राम गुड़ के घोल में मिला लिया जाता है। एक हेक्टेयर में बोये जाने वाले बीज को इसमें मिलाकर छाया में सुखा देते हैं। इससे प्रत्येक बीज पर कल्चर का लेप लग जाता है। इसे 24 घंटे के अंदर खेत में बो देते हैं। यदि कल्चर उपलब्ध न हो तो बरसीम के पूर्व खेत की 5-6से.मी. ऊपरी सतह की 4-5 कुन्टल मिट्टी प्रति हेक्टेयर खेत में समान रूप से बिखेर देनी चाहिए। 25-30 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर बोया जाता है।

कटाई एवं उपज :-

पहली कटाई बुवाई के 50-60 दिन बाद कर सकते हैं। इसके बाद 25-30 दिन के अंतर पर कटाई की जाती है। पौधों को जमीन से 5-7 से.मी. की ऊँचाई पर काटना चाहिए। प्रति हेक्टेयर 100-120 टन तक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। यदि बीज बनाना हो तो फरवरी के बाद कटाई बंद कर देनी चाहिए। 4-5 कुन्टल बीज प्रति हेक्टेयर आसानी से उपलब्ध हो जाता है।

रिजकाः-रिजका का चारा बरसीम के समान पौष्टिक होता है। परन्तु इसे अधिक मात्रा में नहीं खिलाना चाहिए। विशेषकर गाभिन पशु को इसे नहीं खिलाना चाहिए। घोड़ों के लिए इसका चारा विशेष रूप से लाभदायक रहता है। दलहनी होने के कारण इससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। रिजका की फसल को शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती हैं।